

# जनकपुरक दशैं धकचुकाएल रहल सरकार सचेत हुअओ, आन्दोलन महाकालीक रुप होइछै

एकरीके दशैं शुभ-शुभ रहने नीके-सुखे बितल अछि। आन बेरीक पावन-तिहार सनके हिंसा-आतंकक भय जनकपुरमे तेहन नइ रहने, लोक बहुत उल्लासित रहल अछि। बड़ खुसीक बात अछि जे एहिमे लोक अपन आश-मनोरथ आ सुविधानुसार माता दुर्गाक पूजा अराधना कएलनि।

देख'मे जनकपुर कुटी आ मन्दिरक लगैछै आ सीतारामय बुझाइछै मुदा हिन्दू मनक ई पुण्यधाम तत्त्वदर्शी आ समतावादी रहने पंचदेवोपासक अछि। ई लोक दाहा, ईद, भण्डा, विश्वकर्मा पूजा, इन्द्रपूजा, किसनामठी भूलन विवाहपंचमी त' मनबिते अछि, छैठ, चौरुचन, सामा-चकेवा आ भिभिया सेहो मगन मनस' मनबैत रहल अछि। ई भूमि नेपालमे अछि आ पहाड़ी समाज जकाँ- आएल दशैं ढोल बजा आ गेल दशैं ऋण वोका से नै छै। दशैंमे ई लोक पूजा-पाठ, चढ़ौना, उत्सवमे खर्च नै करैए से बात



## समाचार विश्लेषण

## आसुरी शक्तिक विरुद्धमे भिभिया-नृत्य

शारदीय नवरात्रा तान्त्रिक अनुष्ठानकलेल सर्वश्रेष्ठ आ सिद्धिदायक मानल जाइछ। आदिशक्ति महामाया एहि नवरात्रामे मूर्तिमान भ'क' उपस्थित रहैत छथि आ साधक सेवकके उपासनानुसारक फल प्रदान करैत छथि। सृष्टिक पाँच तत्त्वमेस' भूमितत्वके अधिष्ठात्री हिनके मानल जाइछ आ तन्त्र-मन्त्रक सब सिद्धि एहि भूपर सकारात्मक आ नकारात्मक ऊर्जास' जुड़ल रहने दुनू तत्वक साधक एहि दिनमे सिक्य आ साक्षात् रहैत अछि। मिथिलांचलमे भिभियाक प्रसंग एहि सिद्धि-साधना आ डाइन गुणपनके नाशक लेल प्रचलित अछि। योग-तन्त्रमे योगेश्वर भगवान शिव आदि आ



प्रसंग लोक अनुष्ठानक भिभियामे तान्त्रिक रुपस' जुड़ाएल अछि। भैरव तन्त्रमे शक्तिक परिचालन परम होइतहुँ, भैरव आ सातो बहिनी शितलाके

### The Best Hotel of Janakpur

HOTEL SITA PALACE

l j n f b o l s x f l b f s  
d t u m b z ' e s f b g f .

आरामदायी आवासका लागि,  
सर्वोत्तम भोजन, नास्ताको लागि,  
स्वच्छ र शान्तिपूर्ण व्यवस्था लागी,

**होटल सीता पैलेस**

रामानन्द चौक जनकपुरधाम  
फोन नं.-०८१ ५२७६२६, ०८१ ५२७६२७

नइ छै। हक लगाक' एहि दुआरे करैए जे खनाइ-पियनाइ आ पेन्हाइ-ओहनाइस' बेसी जरूरी माताके पूजा अराधना अछि। जुआनी उत्साह एहि दशैंमे महत्वपूर्ण ढंगस' देखल गेलए। ई शुभ लक्षण अछि आ से बहुतो अर्थ। जुआन मन दुर्गा-भक्तिसन निठुर निष्ठाबला, शुभ काममे लगने ओकरा भुतला, भटकक' बर्वाद होएवाक सम्भावना ओहन नइ रहि जाइछ। एहनमे, ओ अपन समय आ ऊर्जाके रचनात्मक काजमे लगबैए। नेपाल सरकार निजामती कर्मचारी सबके दशैं मनब'लेल पाइ आ विदा दुनू दैछ। मुदा एकर सदुपयोग थोड़को भेल कि नइ से नइ देखैछै। दशैं आ दुर्गाक सान्दर्भिकता, एहिस' सम्वद्ध जीवनमूल्य आ लोक-संस्कारमे एकर प्रासंगिकता प्रसारक विषयमे तेहन किछु नइ पाबि रहल अछि।

एखनुक नवका पीढ़ी बुद्धिवादी तर्क आ उपयोगितावादी दर्शन खूब देब' जनैत अछि आ अपन मनोविज्ञान तथा वैश्वीकरणक विज्ञानक हिसाबे नव मूल्य-मान्यता आ अपन बाट-घाट निर्धारण कएल करैछ। प्रत्येक व्यक्तिक बाट, नेपालक पथ बनए आ सेहो सुपथ आ निष्कण्टक। एहि प्रति सरकारक

बाकि ५ पृष्ठ पर

## नेपालोके बहुते जत्थगर अन्ना हजारे चाही

पकलोलानि सामाजिक-राजनैतिक वातावरणक चलते नेपालक बहुतो मद्दासब घवाह भ' गेल अछि सएह नहि ई सौँडिक' महक' लागल अछि। एहिस' देशक सबस' कोमल संगसब मौलाय लागल अछि। एकरा बचाव'के लेल बन्द आ बन्दुकक आन्दोलन नइ, आत्म-परिवर्तनबला अहिंसात्मक जनदवाव चाही— अनमन अन्ना हजारे सनके।

भ्रष्टाचारक विरुद्धमे जखन अन्ना हजारेक आमरण अनसन शुरू भेलै त' सरकार एकरा अदना आजी-गुजी राजनैतिक स्टन्टस' बेसी किछु नइ बूझलकै। बाबा रामदेवके मारि-पिटक' घघरी-चोली पेन्हाक', बलधौसी लुलुवानर कर'मे चसकल मनमोहन सरकार राजनैतिक धौसक जोड़ अजमाइश करैत, अन्नाके जेलो

ध' देलकै मुदा ई बात राजनीतिक बतडर भ' गेलै आ होइत-हवाइत अनशनके पक्षमे विशाल लोकतान्त्रिक देश भारतके जनता सड़कपर उतरि अएलै। सरकारके नाके सुते पानि पियाक', संसदके हिलाक' ठेकान लगा देलकै।

जनताके पक्षमे, भ्रष्टाचार विरोधी लोकपाल विधेयकके हकमे, जीत जनताके भेलै। ई बात एतबेमे अएलै, गेलै, भेलै से बात नइ छै। भितरका बात एकर जनसमर्थन आ लोकतन्त्रक मनोविज्ञानक छलै। सरकारे नइ, प्रत्यक्ष रुपस' सम्पूर्ण संसद आ ओकर संसदीय दलसब एकर कानूनी तकनिकी पक्ष सहित भविष्यमे आव'बला एकर गलत परम्परापर, सशक्तित रहै। कानूनीरुपस' नइ, जनदवावमे संसद आ दलके, ओतुका

बाकि ४ पृष्ठ पर

### हादिक शुभकामना

व्यापत अछि जग जाहि देविक, आत्मशक्ति विशेषसँ मूर्ति तेजोमय जनिक, सभ सुरक तेज अशेष सँ। विश्वेश्वरी जगधारिणी जे जगक पालन-लय करी विष्णुक अतुल जे तेज छी निद्रा स्वरुपा भगवती।

**धुआ-धजा**

पुसा-१९९१ Dhua-dhaja Maithili National weekly

## अन्तरवार्ता

## जनकपुर सबस' सुत्थर, सांस्कृति राजधानी बनतै –परमेश भा

**जनकपुर नगरपालिका कला-संस्कृतिके क्षेत्रमे किएने काज कर' पाबि रहल अछि ?**

देवजाओ, ई अपने बैनर टाडिक', मंचपर जा'क' छमरछैयाँ नइ करैए आ जेहे एत' भाउरमारिक' नाचल करैछ, तेकरे लोक देखैछै॥ हँ, ई नपा अपने नै क'क', एहि क्षेत्रमे लागल सबके थोड़-बहुत सहयोग चरणामृत जकाँ बितरण करैए। ई एकर दरेग छै आ से भाषा-साहित्य, कला-संस्कृतिक प्रति।

**दरेग छै कि दवाब ? पत्रमार डरे कहाँन छुलकले उभ्रैल दैछ ?**

नइ, से नइ छै। संचारके सेहो नगरपालिका उच्च मूल्यांकन करैए। दोसरमे संचारोके तेहन कोनो तेहन आय-उपाय नइ रहने, एकरा सहयोग करब धर्म मानैत अछि।

**कलाकार छी तइ मुद्दाके, संवेग तरमे भाँप'मे शुरुखु छी ! मैथिली भाषाके विरुद्धमे, जनगणनाक समयमे बहुतो भाषिक राजनीतिके चकचालि चललै। तैयो ई चुइ शब्द नइ बजलै, से कथी ला' ?**

भने त' कहलिये, चकचालिके बात। ई नगरपालिका आठ/दस बरखस' निर्वाचित जनप्रतिनिधि विहिन छै आ कर्मचारीतन्त्रके राजनीति करब धर्म नइ छै। तहु दुआरे ई काम नै भेलै, से मानि सकैछी। मुदा इतिहास छै जे ईहो नगरपालिका आ जिविस, सप्तरीसडे



मिलिक' ओहि कालमे मिथिलीके काम-काजके भाषाके दर्जा द'क' एकटा बड़भारी भाषिक कान्ति आनि देनेहि रहै।

**लोक नइ पतिआइए। कला-संस्कृतिक विकासके लेल थोड़को बजेट नइ छुटिआएल जाइछै, से ?**

ई दोष नगरपालिकाके नइ ! निर्वाचित प्रतिनिधि विहिन अवस्थामे, ई सर्वदलीय संयन्त्र आ दवाबपर चलि रहल छै। कहाँ कोनो दल वा

बाकि ५ पृष्ठ पर



प्रकाशक : **कुमार भास्कर**  
सम्पादक : **प्रा. परमेश्वर कापड़ि**  
सहसम्पादक **कैलास दास**  
कार्यालय : जनकपुरधाम-१६, पुलचौक  
फोन नं.: ०४१-५२४९५२  
मो.नं. : ९८४४०२२५९४,  
: ९८४४०५३९७३  
: ९८४४१००१६४  
ईमेल : **dhuadhaja@yahoo.com**  
मुद्रक: **त्रिदेव अफसेट प्रेस**  
**जनकपुरधाम, फोन नं.: ०४१-५२२५९०**



## सम्पादकीय

### समीक्षा, समालोचनाक क्षेत्र सेहो प्रोत्साहन पाबओ

अध्ययन-अनुसन्धान आ समीक्षा-समालोचनाक हिसाबे नेपालीय मैथिली साहित्यक क्षेत्र साफ सुखाएल विसुक्ल लगैछ। एकर अभावक अभियोग कमोवेश सबके लवज, लुकुम बनि गेल होइतहुँमे एकर विकासक ठोस धस केओ नइ धरा पाबि रहल अछि। ईहो बात निर्विवाद अछि जे अपन मैथिलीयोमे किछु हस्ती आ रचनासब एहन अछि जे अति विशिष्ट, बहुत महत्वपूर्ण आ परम ऐतिहासिक अछि। ऐ सबके होइतहुँ आवश्यक एवं उपयोगी समीक्षा, मूल्यांकन बेतरे निडुर-बाडुर, अदना-पदनासनके सेहो लगैछ।

समीक्षा-समालोचनाक संकट भेट'के वास्ते, अध्ययन-अनुसन्धानक अटपट्टीके हटएबाक वास्ते किछु कएल जएबाक चाही। पहिने मैथिलीमे प्रवेश आ पहुँच बनएबाक लेल कविता आ लेख लिखबाक बानि रहल अछि। जिनकर रचनाधर्मिता विधागत रुपस' लगहरि नइ रहल, ओ अद्वैती लेख लिखि लेल करथि आ डा. पशुपतिनाथ भ्मा, डा. आशा सिंह प्रवृत्तिक लोकक कमी नइ रहल अछि। मुदा आइ ओहन लेखकके कोनो बेगरता नइ अइ। कारण समीक्षाक दायरा समालोचनाक दार्शनिकता बहुत बढ़ि गेल अछि।

समयक माड आ आवश्यकताक तगेदा अछि जे एहि प्रवृत्तिके आगू बढ़ाक' रचनाकारक औकाइत, रचनाधर्मिताक पहुँच आ प्रवृत्तिक युगबोध कराओले जाय। मैथिलीमे पाठकीय समस्या, लेखकीय समस्या आ प्रकाशनक समस्याके जे अछि, तकरो एकठौहरी उपाय एकर पाछुए लागल खोजए पड़त। अध्ययन आ मूल्यांकन सन विधाके प्रोत्साहनक हिसाबे, संस्थागत सहयोगमे काज कराएल जा सकैछ। एक/दू लाखक सालाना बजेटमे, दस/बीस हजारक एक/एकटा लघु परियोजना, मैथिली कला-संस्कृति आ साहित्यक विभिन्न विधा, रचनाकार वा प्रवृत्तिपर द'क' ठोस आ उलेख्य काज खूब नीक जकाँ कराओल जा सकैछ।

दशैं पूजा मातृशक्तिक पूजा अछि, आ ई रचनात्मक, निर्माणत्मक त' हाइतहि अछि। माता भगवतीक करुण कृपा पाबिक' पुत्रवती, कौंहिया कंचन काया आ निर्धन धन-धान्य पाबि नेहाल होइए। हमरोसबके सोच आ उपक्रम सकारात्मक आ रचनात्मक हुअए आ कला, विद्यास्वरुपा माता भगवतीक सेवामे विद्यापति टूट्, जनकपुर, मैथिली विकास कोष, धनुषा आ फूलकुमारी स्मृति सन-सन उमेदगर संस्थासब सालमे आठ/दसटा लघु अनुसन्धान काज करा सकैए। मैथिली विकास कोष अनुसन्धानमूलक पत्रिका उत्खनन प्रकाशनक सोच जे बनएने रहए तकार शुभ शुरुआत कराक' एकै सङे सकएटा बेगरता पूर क' सकैए। ने. प्रज्ञा प्रतिष्ठानक आंगन पत्रिका कोनो कम नै छै आ एकरा थोड़ेक आओर मेहनतिस' बहुत चमकाओल जा सकैछ। अनो संस्थासबस' आरामस' पत्रिका प्रकाशन भेने मैथिलीक रचनाधर्मिता प्रोत्साहन सहितक गतिशीलता पाओत।

**राजेश कर्ण**

## साहित्य-सन्दर्भ

# दस महाविद्या आ महाकाली

### परमेश्वर कापड़ि

दस महाविद्या दस तरहक शक्ति सभक प्रतीक अछि। इएह आगम ग्रन्थमे दस महाविद्याक नामे विख्यात भेल छथि। एहि दस महाविद्याक नाम एना अछि— काली, तारा, पोडसी, त्रिपुर भैरवी, भुवनेश्वरी, कमला, छिन्नमस्ता, धूमावती बगलामुखी आ मातङ्गी।

—काली तारा महाविद्या पोडसी भुवनेश्वरी।  
भैरवी छिन्नमस्ता धूमावती तथा।  
बगला सिद्ध विद्या च मातङ्गी कमलात्मिका।  
एषा दश महाविद्याः  
सिद्धवद्याः पकीर्तिता।  
माहेश्वरी कालीक अंशावतारी दस महाविद्याके तंत्र-शास्त्रमे दू कुलमे विभाजन कएल गेल अछि—

(क) काली कुल— काली, तारा, छिन्नमस्ता।  
(ख) श्री कुल — त्रिपुर भैरवी, बगलामुखी, मातङ्गी, भुवनेश्वरी, पोडसी, धूमावती आ कमला।

दस महाविद्याक विभिन्न स्वरुप दृष्टिगोचर होइतो, सब एकहि छथि। हुनकामे परस्पर भेद-बुद्धि नहि राखि, एकत्व-बुद्धि रखने आ अभेद ज्ञानपर स्थिर प्राण-प्रतिष्ठापूर्वक कएनाइए समुचित अछि।

**शक्ति महाकाली**  
ई आधा महाशक्ति ( महाकाली) सर्वकारण रुप प्रकृतीक आधारभूता भेने महाकारण' छथि। इएह मायाधेश्वरी छथि, इएह सृजन, पालन, संहारकारिणी आधा नारायणि शक्ति छथि। परात्पर नामस' प्रसिद्ध, विश्वातीत महाकाल पुरुष शक्ति एक नाम महाकाली अछि। शक्ति-शक्तिमानस' अभिन्न छथि। उद्वैतवाद अक्षुण्ण रहैछ। अग्निक दाहक शक्ति जकाँ अग्निस' भिन्न छथि। प्रकाश शक्ति जकाँ सूर्यस' अभिन्न छथि। तहिना चिदात्माक शक्ति चिदात्मास' अभिन्न छथि। ओ एकहि तत्व शिव-शक्ति रुपमे परिणत भ' रहल छथि। अर्धनारीश्वरक उपासनाक इएह मौलिक रहस्य अछि। शक्ति-शक्तिमानमे स्त्री-पुरुष भेद माननाइ अनुचित अछि। एहि आधारपर रहस्य-शास्त्री कहैत छथि—

रसा च ब्रह्म स्वरुपा च नित्या सा च सनातनी।  
यथात्मा च तथा शक्तिर्यथाग्नौ दाहिका स्थिता॥  
अतएव ही योगीन्द्रैः स्त्री पुग्भेदो न मन्यते।  
सर्व ब्रह्मयं ब्रह्मान् शाश्वत सदीप नारद॥

(दे. भा. ९/१/१०-११)



उपासक अछि। पाश्चात्य मनुष्य शोकावसरपर कारी पट्टी हाथमे बन्हैत अछि। फांसीक हुकुम सुनाव'बला' न्यायाधीशके सेहो लाल वस्त्र पहिर'के प्रावधान अछि। शोकस' ज्ञान, प्रकाश मन्द भ' जाइत अछि। सम्पूर्ण चेतन-ज्योति शोक सन्तापस' आवृत भ' जाइत अछि। कीर्ति मनुष्यमे रश्मिवत् निकलि क' चारु भर ओहि मनुष्यके प्रकाशित क' दैत अछि। प्रकाशक रुप शुक्ल-वर्ण अछि। सङे कृष्ण वस्त्रवत् एहिमे सौर-रश्मीसबं लीन नहि भ' क' प्रतिफलित होइत अछि। एहि सादृश्य स' शुक्ल वस्त्रके कीर्तिक निदान मानल गेल अछि। पानिमे रुद्र-वायुक प्रवेशस' धनता अवैत अछि। ओएह धन पानि हरित कदइ बनैत अछि। सेहें "पुष्कर पर्ण" अछि -

“आपो वै पुष्कर पर्णनम्”

(शत ६/४/२/२१)

एहि अनुसार ई पात पानिक अछि। इहे आगू जा' क' फेन, मृत, सिकता, शर्करा, अश्ना, अय, हिरण्य, एहि रुपमें परिणत भ' क' पृथ्वी पुर रुपमें परिणत भ' जाइत अछि। एकरा पुष्कर कहल जाइत अछि। पृथ्वीक सृष्टि “पुष्करपर्ण”स भेल अछि। तएँ, ओहि पानि स' उत्पन्न हुअबला कमलके पृथ्वीक निदान मानल जाइत अछि। जाहि देवताक हाथमे अपनासभ कमल पुष्प देखि' त' विश्वास कर' चाही जे सम्पूर्ण भूमण्डलपर ओहि देव-प्राणक सम्राज्य अछि। माया जनित मोहस' मनुष्यक विवेक शक्ति नष्ट भ जाइत अछि। एमहर सुराक सेहो इहे गुण अछि। तए सुरा के मोह-शक्तिक निदान मानल गेल अछि।

भगवतीक हाथमें “सुरापात्र” अछि, अइस' ऋषि इहे सिखवैत अछि जे इहे महामाया अपन “मोह-मदिरा”स' सबके उन्मत्त बनएने छथि। फांसी रक्तपात अछि, तए रक्त-वस्त्रके एकर निदान मानल गेल अछि। खूब वर्षा भेलापर वृक्षसभमें हरियरी आवि जाइत अछि। रुक्षता चलि जाइत अछि। सर्वत्र शान्तिक सम्राज्य भ' जाइत अछि। तएँ हरियर वस्त्रके शान्ति रस क निदान मानल गेल अछि। स्टेशनसबपरके हरियर भंडा निरुपद्रवताक निदान अछि। लाल भंडा खतराक द्योतक अछि। एहि सब उदाहरण स' इहे बुझाओल गेल अछि जे कि निदान, अनुरूप भावेस' सम्बन्ध रखैत अछि।

**बाकि पृष्ठ ५ पर**

## ओ जे कएलनि E-mail

dhuadhaja@yahoo.com

**अहाँ नै कहबै त' लोक बुझतै गमतै केना ? अखैनतो जे मुहजाब लगाक' गुम्मी सधनो, ठौंसा वेड फुलल बैसल रहबै त' बदिअल-बहसल विन विचारीसब उदाम बनल बलधौसी बलपेली कैरते रहत ! एकरा रोक' टोक' आ सैर-साबतु कर'के लेल संचारी बनू आ सोभे निशंक भ'क' E-mail करु !**

माता दुर्गा नेपालक सबटा राजनीतिक अन्धकारके हरण-भक्षण करथि आ हमरा सबहक राजनेता लोकनिके नव नेपालक संविधान लेखन आ संरचना विकासक सद्बुद्धि देथि।

हमरासबकह अगिला दशैं, दियावाती धरिमे, नयाँ संविधान लिखाक' देशक संघीय संरचनाक विकास भ'क', आमोचुनाव भ' गेल रहए, से माता महाकालीस' अराधना अछि।

पराशक्ति माता भगवती सर्वशक्तिमान छथि, मातृरुपा छथि आ प्रकृति स्वरुपा सेहो छथि। जे जतेक अछि सब हुनके माया-शीक्रक प्रभाव छन्हि। सब हुनकेस' छनि, सब हुनके मे छनि। हमसब हिनकर पूजा आराधना बहुत धूमधमास' एहि दुआरे करैत छिऐन्ह जे ओ हमरासबके जान-समाड, सुख-सौभाग्य, बनौने रहथु। हमरासबके सृजनात्मक शक्ति आ रचनात्मक प्रवृति दिस उन्मुख कएने रहथु। एहिस' अपना सबहक लोक-समाज, साहित्य-संस्कृति समृद्ध, अशेष आ उन्मुख बनल रहए।

**—प्रा. विनोद साह, व्यवस्थापन**

अहू बेर जे संविधान नै बनल त' देशके दुर्मतिয়া गंडेसतै आ ओबा, उधवा उठतै ! देश छिन्न-भिन्न आ ओद-बाद भ' जएतै, तेकरो अन्देशा हबे। नातसबके माता भगवती सदेवबद्धि आ शुभशक्ति देथि जाहिस' ओसब केहुना संविधान बना लेथि। नइ त' देशक दुर्दशा लोक देखि सकत।

**चेतना शर्मा, राजविराज**

धूआधजा पत्रिका बड़ नीक लगैए। ठीके एकरामे दमखम छै। सब अंक नइ भेटने मन लुलूआ जाइए। पुरनको अंकसबके पीडिएफ बनाक' पठा दल जाय। ई पत्रिके छै एते नीक आ संतुलित जे कहियो बसिआइन लगबे नइ करतै।

**पूर्णन्दु भ्मा, टावर चौक दरभंगा**



# अजेय अपरामहाशक्ति के राष्ट्रशक्ति बनाबी

शक्ति सृजनात्मक होइछ, प्रतिरक्षात्मक होइछ, पूरकहोइछ आ सर्वतोभावेन कल्याणकारी होइछ। आयोग्य वा मृत्यु शक्तिहीनते मे अछि। पराशक्ति, अग्निदिमाता भगवती, जगतजननी भगवतीक पूजा लोक कए तरहेँ करैत अछि। अवश्यकता आ प्रासंगिकता एकर धार्मिकस अधिक चेतनामूल भाव-ग्रहणमे रहने आत्मविश्वास, शुभ संकल्प, सृजनात्मक राग-भाव आ लोककल्याणकारी उत्प्रेरणास करव विशेष महत्व रखवेटा करैछ।

सदैव ध्यान रखवाक चाही जे समयपर, सता आ प्रभुतापर ग्रहण लगने, संस्थापन आ व्यवस्थापन उबानि आ नकमानि भेने अत्याचार आ दुरात्माके प्रभाव बढने, एकरा सबस' निकास पावके वास्ते, पुनसंस्थापनके, लोक मंगलकामना आ सर्वसिद्धि पुण्य फल प्राप्तिक हेतुए देवता शक्तिस जे मातृशक्ति अजेय आ क्रियाशील भेलीह ओहए असलमे दुर्गा-शक्ति अवतार अछि।

नेपाल एखन संरचना विकासके क्रममे होइतो एकरामे बहुते राजनैतिक श्रोत आ ओझरी लागि ठमका भुटला देने अछि। एकर समस्या, महाआसुरी रुपस' धारणक' उन्टे एकरे गरेस' चाहैत अछि। अग्रगमनके त' वाते छोडू अस्तित्वेपर, एहन क' ने पडिगेल अछि जे कखनोकाल, अकुलएल



मन निराश भ' जाइत अछि। आगूक वाटे नै सुझाइछ, आ जे घोन्हियाह रास्ता टोइया टापरस बुझाइतो अछि त' राजनैतिक कंटक, स्वार्थी दलीय दलदलमे' धस' योग्य। ई ने जनताक भाग्य अछि आ ने परम-राजनैतिक सत्य। मातृशक्ति, दैवीशक्ति विद्या-बुद्धि चेतना-ज्ञान, शान्ति

आ क्रान्ति स्वरूप अछि। एकरा जागृत कएने, मन-बुद्धि-चेतनाके संगे सृजनात्मक संकल्पेपर श्रद्धारखने राष्ट्र निर्माण, समाजविकास आ शान्तिदायक शुभमंगल वातावरण प्राप्त होएबेटा करतै। दलीय-धौस-धम्मकस ऐंढी आ टेंढीस' बेसी, स्वार्थ आ

विध्वंस' बेसी बेतरताछै देवता जकाँ सब अपन-अपन शक्तिके ढोरिया महाशक्ति, अजेय अपराशक्तिके-राष्ट्रशक्तिके रुप दैत सर्वतोभावेन शुभमंगल, सुखी-समृद्धिबला गरिशील आ निरोग नेपालक निमार्ण विकासमे लागबे असल दुर्गा-पूजा आ शक्ति अराधना होएत।

# दुर्गा अवतारक कथा

प्राचीन कालमे देवता आ असुरसभमे पुरे एकसय वर्षधरि महासंग्राम भेल छल। ओहिमे असुरक सेनापति महिषासुर छल आ देवतालोकनिक नायक ईन्द्र रहथि। ओहि युद्धमे देवतालोकनिक सेना महाबली असुरस' पराजित भ' गेल छल। सब देवताके जीतिक' महिषासुर स्वर्ग लोकक राजा बनि बैठल। आ समस्त देवतासबक काज अधिकार छीनि लेलक तखन परास्त देवतालोकनि प्रजापति ब्रह्माके आगू क' ओहिठाम गेला, जतए भगवान शंकर आ विष्णु विराजमान रहथि। देवतालोकनि महिषासुरक पराक्रम आ अपन पराजयक सम्पूर्ण वृत्तान्त ओहि दुनू देवेश्वरके सविस्तार सुनएलथि आ सङे असुरक वधक उपाय सेहो पूछलथि।

देवता लोकनिके आर्त बचन सुनिक' भगवान विष्णु आ शिवके असुरपर बड़ पीत लहड़लनि। पिते मुह लाल आ भौं टेढ़ भ' गेलनि। तब क्रोधित भेल विष्णुक मुहस एकटा महान तेज प्रगट भेल। तहिना ब्रह्मा, शंकर आ इन्द्र आदि आनोआन देवता लोकनिक देहस' सेहो तेज निकलिक' ओहि तेजपुंजमे मिश्ररागेल, जकर दिव्यप्रकाशस' सबहे दिशासबमे पसरि गेलछल। ओहि तेजस' महादुर्गाक उत्पत्ति भेलनि, जेकरा देखिक' महिषासुरक सताएल देवतालोकनि अत्यन्त प्रसन्न



भेलथि। सबहे देवता अपन-अपन हथियारस' हुनका सुसज्जित कएलन्हि। अपना-अपना भरस' आभूषण, वस्त्रसभ स' सम्मानित कएलन्हि। तेकराबाद देवी वेरि-वेरि अट्टहासपूर्वक जोड़-जोड़स' गर्जना कएलन्हि। हुनक भयंकर नादस' सम्पूर्ण आकाश गुंजित भेल। प्रतिध्वनिस' सम्पूर्ण

विश्वमे हलचल मचि गेलै, समुद्र काँपि उठल, पृथ्वी डोल' लागल आ पर्वत हिल लागल। तखन देवतालोकनि बहुत प्रसन्नताक संग सिंहवाहिनी दुर्गा भवानीक जय-जयकार कएलन्हि। महर्षि लोकनि हुनका स्तवन कएलन्हि। देवीक गर्जनस' तीनू लोकके क्षुब्ध देखि असुरगण अपन समस्त सेना साजि-वाजि देवी

संग युद्ध कर' लागल। ओहि काल चतुरंगिणी सेनासहित महादैत्य चामर, महाहन्द, असिलोमा,वाष्कल आ विडाल आदि सेहो युद्धकर' लागल आ देवी सबके संहार क' देलथि। एहि तरहेँ अपन सेनाक सर्वनाश होइत देखि, महिषासुर भैंसा रुप धारण क' दवीक गणके डेराब' लागल। देवी ओकरा डोरीस बान्हि जे देलथिन्ह त' सिंह रुप ध' उधवा मचब' लागल। ओकरो मस्तक फोड़' लगलथि त' चट द' पुरुष रुपमे प्रगट भ' तलवारस' लड़ लागल। देवी ओकरो गछेरिक' निरस्त्र कएलन्हि। तब विशाल गजराजक रुप बना लेलक। देवी ओकर सुड़े काटि देलनि। तेकर बाद उ महादैत्य फेरु भैंसाक रुप ध' क' तीनू लोकके व्याकुल कर' लागल। तखैन क्रोधमे भरि देवी मधुपान क' लाल-लाल कराल आँखि बना कूदलीह आ महादैत्यके छातीपर चढ़ि गेलथि आ ओकरा पयरस' दावि शूलस' कंठपर प्रहार कएलथि। पयर तरमे छटपटाइत महिषासुर अपन मुंह दने दोसर रुपमे बहार जे होइते रहए, कि ओकरा अपना बले अदहेपर रोकि, अपन विशाल तलवारस घेंटे काटिक' खसा देलन्हि। ई देखिक' दैत्य सेना भागि गेल। देवता लोकनि एहिस' अत्यन्त प्रसन्न भेला आ महर्षि लोकनि सङे देवीक स्तवन कएलन्हि।

## शुभकामना

शुभ-विजयादशमी आ सुखरातिक  
हार्दिक मंगलमय शुभकामना।

## गा.वि.स. कार्यालय

बघचौडा, धनुषा

## शुभकामना

शुभ-विजयादशमी आ सुखरातिक  
हार्दिक मंगलमय शुभकामना।

## नेशनल एकेडमी

भानुचौक, जनकपुरधाम  
फोन नं.: ०४१-५२५९९९

## शुभकामना

शुभ-विजयादशमी आ सुखरातिक  
हार्दिक मंगलमय शुभकामना।

## सिटी कलेज

जनकपुरधाम  
फोन नं.: ०४१-५२२०७२

## शुभकामना

शुभ-विजयादशमी आ सुखरातिक  
हार्दिक मंगलमय शुभकामना।

## पब्लिक युथ क्याम्पस

कदम चौक, जनकपुरधाम



**दस.....**



प्रकृतिमे शक्ति-तत्त्व निरुपणीय अछि । तएँ प्रधान रुप स' शक्ति सम्बन्धी निदानपर प्रकाश कएल गेल अछि ।

“शक्ति प्रतिमा” के अनेक रूप अछि। केकरो चौसठ भुजा अछि, त’ केकरो बत्तीस। केकरो आठ, त’ केकरो चारि। केकरो दू अछि। केओ जिउ निकालने अछि, त’ कओउ हाथमे कमल। किनेको हाथमे नरमुण्ड, त किनेको कर्तरी, (कत्ता) किनको परशु अछि, त कओ मुदांपर ठाढ़ अछि। केओ अट्टहास करैत सुरापान क’ रहल छथि त’ कओइ नग्न छथि। नहि बुझवला उपाहास जरुर करए महज जइ दिन उनका रहस्य मालूम होतए, ओहि दिन अवश्य ओं हिन्दू संस्कृतिके आगा अपन मस्तक झुका देतै।

महाकाल पुरुषक महाशक्ति रूप अइ महाकालीक, स पाहल निरुपण कएल गेल अछि । सर्व प्रथम ओहिके निदानक दिस सबक ध्यान आकर्षित कएल जाइत अछि । जाहि-जाहि देवताक जे-जे निदान अछि, आ ऋषिलोकनि हुनक तदनुरूप ध्यान बना देने अछि । प्रत्येक देवताक उपासना विधिक प्रारम्भमे “अथध्यानम्” लिखल रहैत अछि । ऋषि आदेश करैत अछि जे, जइ देवताक उपासना कर जा’ रहल छी, पहिने ओकर स्वरूपके ध्यान करी । यदि महाकालीके उपासना आ साधना कर चाहैत छी त’ निम्नलिखित ध्यानानुमोदित स्वरूपरूप दृष्टि कएल जाय –

शवारुढां महाभीमां घोदरदंष्ट्रा हसनमुखीम् ॥  
चतुर्भुजां खड्गमुण्ड वराभयाकरां शिवाम् ॥  
मुण्डमाला धरां देवीं ललजिह्वां दिगम्बराम् ।  
एवं सञ्चित्तन्तयेत् कालीं श्मशाना लचवासीनीम् ॥

“महाकाली मुद्रापर सवार छ्थि । हुनक शरीराकृति महा-  
 डेरावोन छन्हि । अहुनक दाँत बहुत तीक्ष्ण रहने महाभयावनी अछि ।  
 एहन महाभयंकर रुपवाली ओ आदि माया हँस रहल छ्थि । हुनका  
 चारिटा हाथ छनि । एक हाथमे खड्ग अछि । एकटामे नरमुंड अछि ।  
 एकटामें अभय मुद्रा अछि । एकटामे वर अछि । गरामे मुण्डमाल  
 अछि । जिउ बाहर निकलल अछि । ओ सर्वथा नग्न अछि । श्मशान  
 हुनक आवास-भूमि अछि ।”

आव "रहस्याथ" पर दृष्टि देल जाय -  
एहि सँ पहिने कहल गेल अछि जे महाकाली नामक महाशक्ति प्रलयरात्रिक मध्यकालसँ सम्बन्ध रखैत अछि। संसार जखन धरि शक्तिमान रहैत अछि, तखन धरि ओ शिव अछि। शक्ति निकलि गेला पर ओ "शव" बनि जाइत अछि। दोसर शब्दमे कहि त' ओकर स्वरूपे नष्ट भ' जाइत अछि। विश्वातीत परात्पर नाम स' प्रसिद्ध महाकालीके शक्तिभूता महाकालीके विकाश विश्वसँ पहिने अछि। विश्वके संहार कर'वाली कालरात्रिक विकाश कालरात्रि ओएह अछि। सृष्टि कालमे हुनक प्रतिष्ठा नहि अछि, प्रलय काल हुनक प्रतिष्ठा अछि। दोसर शब्दमे कहि त' विश्व हुनक प्रतिष्ठा नहि छै, अपितु शक्ति शून्य, तँ शवरूप विश्वके निदान मानल गेल अछि। ओ अनुपाध्य तमरूपा छथि। नाश कर'वाली अछि। शत्रु संहार कर'बला योद्धासबके आकृति महाभयावह भ' जाइत अछि। साधारण मनुष्य त' ओकरा दिस देखियो नहि सकैत अछि। बस, प्रलय रात्रिरूपा संहार कारिणी शक्तिक एहि स्वरूपके बतएवाक लेल "भयानक आकृति" के निदान मानल गेल।

शत्रु पक्षक सेनाक नष्ट करके यादवी अट्टहास करते अछि । ओकरासभक हँसी, भीषणताके लेल होइत अछि । ओ समय ओकरे साम्राज्य भ' जाइत अछि । इहे स्थिति महाकालीके अछि । तए ओकरा लेल “हसन्मुखीम्” कहल जाइत अछि । अपितु निर्वल मनुष्यसभक आक्रमणके विफल कर'लेल, सबल मनुष्य ओकर निर्वलतापर हँसल करैत अछि । अखन सेहे दशा विश्वक अछि । जे विश्व एवं विश्वके प्रजा अपनाके सर्वेसर्वा बुझैत छल, आइ ओ ओकरास' परास्त अछि । ओहि भावक निदान हँसनाइए अछि । प्रत्येक गोल वृत्तमें ३६० अंश मानल जाइत अछि । आहिमें नब्बे-नब्बेक चारि विभाग मानल जाइत अछि । इहए ओहि वृत्तक चारिटा भुजां अछि । ओकरे “स्वस्तिम्” कहल जाइत अछि । खगोलक उएह चारु स्वस्तिम् इन्द्रोपलक्षित चित्रा नक्षत्र, पूषोपलक्षित रेवती नक्षत्र, तार्क्ष्योपलक्षित श्रवण नक्षत्र, बृहस्पत्युपलक्षित लुब्धकवन्धु नक्षत्र अछि । एहि चारिटा नक्षत्रमे स' सम्बन्ध अछि । चित्रास श्रवण ठीक षडभान्त पर (१८० अंश पर) अछि । रेवती लुब्धक ओतने दुरीपर अछि । आकाशक ओएह चारु भुजाक निरूपण करैत “श्रुति” कहैत अछि -

स्वास्ति न इन्द्रा वृद्धश्रवाः स्वास्तिनः पूषा विश्ववेदाः ।  
स्वास्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्ट नेमिः स्वास्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥  
—(यजु. वे.)

एहिस्' इहे कहवाक अछि, जे पूर्ण वृत्तमे चारि भुजा होइत अछि । ओ महाकाली पूर्ण रुपा अछि - ई पूर्वोक्त संख्या विज्ञानमे स्पष्ट भ' गेल अछि । अनन्ताकाश रुप महाअवकाशमे चतुर्भुज रुपमे परिणत रहियोक' ओ विश्वक संहार करैत छथि । इहे रहस्यक निदान चारि भुजा अछि ।

नाशशक्तिक निदान“खड्ग” अछि । नष्ट हुअवला प्राणीसभक निदान “काटल मस्तक” अछि । स्थिति-विच्युतिक नाम कम्प अछि । कम्प भय अछि । इहे क्षोभ अछि । विश्व ससीम अछि, तएँ ओ सभ्य अछि । मुदा व्यापक तत्वमे कम्परुप भयक अभाव अछि । ओकर अतिरिक्त कोनो स्थान नहि, तएँ ओहिमे भय नहि अछि । एहन एकमात्र अछि विश्वातीत “महाकाल पुरुष” ।

एकएत' ओ व्यापक छथि । “अभय गतो भवति” - इत्यादि रूप सँ ओह परात्परके “उपनिषद्” अभय कहलक अछि । ओ संहार करैत अछि, भयानक अछि , घोर रुपा अछि, सब किछ अछि । महज विश्वास कर' पड़त, अभय पर प्राप्त ओकरे आराधनापर निर्भर अछि । “अभयमुद्रा” ओकरे निदान अछि ।

विषय सुख क्षाणिक अछि । तएँ दुःखद रूप अछि । परम सुख त' ओकरे आराधना स' भेटि सकैत अछि । परम शिव रूपा त' ओएह छथि । जीवित वा प्रलय कालमे सेहो ओएह सभक आधार अछि । ध्वंस्त तत्वस' वाहर कओ कोना बाँचि सकत । एहि परायण भावक निदान "मुण्ड-माला" अछि ।

विश्व ओहि शक्तिके आवरण भ' जाइत अछि । “तत् सृष्टवाम तदेवानु प्राक्सित”- के अनुसार ओ शक्ति विश्व निर्माण क'ओकर भीतर प्रविष्ट भ' जाइत अछि । विश्वे ओकर वस्त्र अछि । मुदा विश्व नाशक अनन्तर वर स्व-स्वरूपस' उल्लवण अछि । ओहि स्थितिमे आचरणक अभाव अछि । दिशा' मात्र ओकर वस्त्र अछि । एहि अवस्थाक निदान “नग्न भाव” अछि ।

आहं महाशक्ति क पूर्ण विकाश काल अछि, विश्वक प्रलय काल । सौसे जीवन जखन श्मशान बनि जाइत अछि, तखन ओ तमोमयीक विकास होइत अछि । “श्मशान” एहि अवस्थाक निदान अछि । ई अछि, “महाकाली”क स्वरूप । साधारण मनुष्य एहि गम्भीर भावक आराधना कर'मे असमर्थ अछि, तएँ एकर कल्याणक लेल परम कारुणिक महर्षिसभ निदान द्वारा पूर्वोक्त प्रतिमासभक कल्पना कएने अछि । प्रलय कालक स्थिति केहन अछि ? ओकरा बुझने की लाभ भ' सकैछ ? पूर्वोक्त ध्यान विज्ञान स' सबके उत्तर भेटत ।

दस महासिद्ध स'

## आसुरी...



जासुरी शक्तिके वरुद्धमे कएल जाइछ। भैरव कालीक बहुता  
असन्तानमेस' अष्टभैरव अर्थात् आठ्ठा भैरव छथिन्ह। शत्रु-संहारक,  
लोकक जाइ-जानक रक्षक आ शिवदूतक रुपमे भैरव पूजल जाइछ  
आ महाकवि विद्यापति जय जय भैरवी असुर भयाओनी... कहि  
भैरवी शक्तिके आह्वान एहि लोकक सकल शत्रु संहारकलेल  
कएने छथिन्ह। दशैया भिभियामे, नगरक ब्रह्म डीहवार आ  
भैरवके आह्वान कएले जाइछ। हिनकसवके साक्षी, सन्मुख राखि



हलतमें चलेल, बनैत रहबाक हेतुए ई परम्परित अछि। तान्त्रिक रहस्यस' सबअर्थे भडल एहि तान्त्रिक खेलके बहुत बात आ पद्यति विनु जनने-बुझने लोक एकरा नृत्यक रुपमें, दशैमें प्रस्तुत कर' लागल अछि। तन्त्र खेल आ प्रदर्शनक विषय नहि। मार-सम्हारके गुणस' मण्डित रहने एकरा प्रति साकांक्ष रहबाक चाही, नइ त' ई उन्टा पड़ने, देनीके लेनी क' देख। भगवती आ भैरवी-तन्त्रस' एकर प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहने एकरा मंचीय प्रदर्शनक विषय कहियो नइ बनएबाक चाही। ईहो नइ बिसरबाक चाही जे योग-तन्त्र आदिम विद्या अछि आ एम्हर आवि ई भिभिया गाम-घरमें स्त्रीगणसभ द्वारा खेलल जाइछ।

नेपाल प्रजा प्रतिष्ठान एहि विषयपर बजेटीय कार्य स्वीकृति दैत एकरा महोत्सवक रुपमें जे संचालन करबाक हिसावे जनकपुर आएल छल आअ सिसन १४ गते शनिदिन कार्यक्रम सम्पन्न भेल होइतोमें, महोत्सव कोनो हिसावे नइ रहल। से एहि दुआरे जे एकर आयोजन सहयोगी संस्था काजस' बेसी लौल लोभमें डुबल बुबुभारहल छल। ओहूस' बेसी एहि भिभिया-महोत्सवस' सम्वद्ध कार्यपत्रके लेखनक व्यवस्था होइतहुँमें, कार्यपत्र पढ़ले ने गेल। कार्यपत्र लेखक डा. मौन स्वयं स्वीकार कएलन्हि जे एकरा विषयमें हमरो तेहन गहीर अध्ययन नहि अछि। एहनमें एहि विषयपर ओहन भ'क' सर्वपक्षीय ढंगस' एहि विषयके सम्वोधन आ विद्वत

मार्गदर्शन सम्भव नहीं रहल । सबस'सोकाजक विषय एहि गोष्ठीक ई छलै जे एहिमे ओहन लोकक उपस्थिति छलै जे एकरा चलबैत बनबैत अछि आ ओहिलोकके बूलनुक लोकसब ओकर धार्मिक, तान्त्रिक लौकिक आ निष्ठास' जोड़ भिक्षियाके बारेमे कहितै । एहन बूझाक' कहितै जैस' ओकर विश्वास गाढ़ आ खेल प्रतिक आवेग बढ़ितै । बड़ भारी विभेदकारी बात एकटा आओर खटकैछ जे भिक्षियाके छोटवर्णाके बूझि प्राय कोनो मैथिली लोकगीत संकलनमे एकरा स्थाने नइ भेटल अछि की ? एखन एकटा बातमे आरो सर्तक होएवाक बेर ईहे छै जे एकरा बजार आ मंच पकड़ाव'के हिसाबे बहुतो लोक भजाक' दुरि सेहो क' रहल अछि । ई नहि होएवाक चाही सेहे नइ एकरा सांस्कृतिक नृत्यक रुपमे बजारमे केओ नइ पकड़ौक ! ई जाहि तन्त्र आ सौन्दर्यस' जुड़ल, बनल बात अछि, तेकर मौलिकता आ अनुष्ठानिकताक रक्षा होउक । व्यवसायीकरण भेने ई ओहिना उठि, भसि जएतै । एखनके समयमे किछु गेडियाह उपभोक्तावादी गलथोंथीक' तन्त्र-मन्त्र आ भूत-प्रतके नहि मानैछी, कह'लेल कहौथ, मुदा जे योगेश्वर शिव, बुद्ध आ गोरखनाथके, तन्त्र-सम्प्रदाय शास्त्रीयता आ विद्याके जनैत छथिन्ह हुनका एकरा प्रति औरी उठएवाक कोनो अधिकार नइ छनि । हँ ई बात दोसर छै जे ई तन्त्र बहुत बेसी साधना आ सिद्धिक प्रतिफल छै आ एहन सिद्धि साधक हरसठे देखाइ नइदैछै आ तएँ एकर अस्तित्व आव संकटमे पड़ल, सोनास' 'टलहा दरब' बनल अछि ।

**जनकपुरक.....**

कार्ययोजना रहबाक चाही आ एहि अवसर सबके उपयोग जुआन-जहानके धार्मिक-मांगलिक कार्यसबमे प्रवृत्त कराक', नीक धस धरा सकैत अछि। हिंसा आ अपराध नियन्त्रण बन्दुक आ सजायस' तेहन नइ, जेहन आत्मपरिवर्तन आ सकारात्मक सोच तथा रचनात्मक प्रवृत्तिक उत्प्रेरणास' भ' सकैए।

## जनकपुर .....

दबाव समूह एकरापर जोड़ 'द'के' कला-संस्कृति, भाषा-सापहत्यपर बजेत छुटिअएवाक माड कएलकैए ? जेहे बच्चा कनै छै, मायो ओकरे दूध पिअवै छै ! नान्हि-नान्हिटा वातसबपर जनजाति, पिछड़ावर्ग त' टोल-निर्माण समितिसब आन्दोलन आ बन्द-विरोधक धमकी त' देत मुदा कला-संस्कृतिके विकास सबस' महत्वपूर्ण विकास अछि । ई अप्पन विकास अछि आ एकर विकास पहिने हुअ' चाही, से कह'बला आइतैक नगरपालिकामे हुलकीयो मार' नै आएल अछि ।

नगरपालिका अपने नै एखन नागरिक समाजपर  
चलैछै आआ असलमे जनभावनाक प्रतिनिधित्व निर्वाचित  
प्रतिनिधि ए क' सकैए ।

अपनहु त' रगकमी, कलाकार छिए ? साहित्य-  
संस्कृतिस' नीक सम्बन्ध अइ । तब अपने की कएलिए ?

हम जे छी, से एकटा कमचारी, प्रतिनिधि नइ ! आ एसगर वृहस्तपतियो भूठ होइत छथि । हम जे कहली, ओकरा दलीय प्रतिनिधिसब बुझिए नइ सकल आ ताँ एकर बजेटीय व्यवस्था नहि भेल करैछ । हमर पद कर अधिकृतके अछि । एकर भितरमे हमर कार्यक्षेत्र आ विषय-सम्बद्धता कला-संस्कृतिसे' नइ अछि । ताँ अपने मनक बातके, बुझितो, जनितो एकरा स्वीकृत नइ करा पवैछी ।

છી સુકુમાર ભાવનાક કલાકાર આ પદે આછ- યમરાજા  
છિમાઇન છોડક' કર અસૂલનાઈ ! કર્મ આ ભાવનામે  
સન્તુલન કેના મિલબૈત છિએ ?

सर, हमर कलाकारिता गुण एहि ठाम बड़ सहयोग करै। पहिने जकाँ 'खून चुसिक' कर बोकएवाक समय आव रहलै नै। तब एहि लोकतान्त्रिक समयमे अपन कलाकारिताक माध्यमे पोल्हा-पनियाँक, कके आवश्यकता आ एकर दायित्वके अनुभूतिबोध करएवाके हमरा बड़ आनन्द होइए आ करदाता सेहो हँसीए-खुसिए एकरा अपन जिम्मेवारी बुझैत छथि।

समस्या आ असुविधास' बंशुत लोक एकरा उलहनम  
नरकपालिका कहैए ? बुझाइतो छै ई संरल, मरल पड़ल  
सनके । अपनेके से नइ लगैए ?

ने, स नइ छै ! लोकक एकरास बड़ बसी अपक्षा छै आ तुलनात्मक रूपस' से नइ भेटने, अपनैतीमे एहन उहलन दैखै आ ई आत्मीय लगैछ। दोसरमे जनकपुर महान छै ! एकर माटि-पानि, धाम आ तीर्थक गरिमा-महिमास' मण्डित छै । एकर धार्मिक-आध्यात्मिकता आ कला-संस्कृति अपूर्व, उल्लेख्य छै, तएँ ई कहियो केहुना नइ मरि सकैए ! संर'के त' बाते जाय दिअ' हँ गतिहीन आ अविकासक अन्धारमे ई जरूर छै आ तइ ई स्थितिबोध छै । फेर कल्हका जनकपुरगमकतै आ चमकतै ।

अच्छा इ जनकपुर ककर ? नपा.क ? विवस.क ?  
वृहत्तर के वा गुठी के ?

इ बात कहव बड़ भारी बात छै, सर !... जखन जकरा जत्त'स' फायदा होव'बला रहैछै, वजेट टान'के रहैछै, सेहें तखन एकरा अपन कहिक' प्रस्तुत करत । सबस' पहिने हमरा जनिते एकरा अपन स्वार्थ'स' काटि, काछिक' राख' पड़ैत । निस्वार्थ'भावे नागरिक समाज एकर मुद्दा आ समस्या'के जाव'धरि अप्पन नइ मानतै, जनदबावी प्तिवद्धता नै देख'एतै, तावत धरि एकर कल्याण नइ छै ।

लोक कहेंछे जनकपुर संघीयराज्यक सांस्कृतिक राजधानी बनतै ? भुखरल भंठी जनकपुर मरल मरतुक्की राजधानी त' ने कहाओत ?

नई, बनेब' बतरे एकर ई दुरावस्था छै । नव' नमोण आ संरचना विकासलेल नें संघीयता अलैए ? जाहि लोकक लेल ई राजधानी बनतै,तेकरा, एकरा प्रति बहुत बेसी श्रद्धा आ आत्मियता छै । एहनमे जरूर मन एतेक पछिम आ रागात्मक भावक छै,यो ठीके अपन जनकपुरके चमका, छमकाक' नितुर अमनियाँ क' लेतै । देखवैए देशमें, एहन समृद्ध आ शुभ राजधानी आन कोनो रहवे नै करतै !



# भैरव भाइ आ भैरवी-तन्त्र

शिव लीला आ तन्त्रक महिमा शक्ति अपूर्व त’ अछिए, शिवक अनेक रुप आ नाममेस’ एकटा नाम भैरव छनि । सम्प्रति शिवक भैरव रुपके अनेको प्रकार बताओल जाइछ । केओ आठ त’ केओ बारह कहैत अछि आ ओहिमेस’ सर्वाधिक प्रचलित काल-भैरवरुप अछि । हिनक वाहन श्वान अछि आ हिनक देवीक नाम भैरवी अछि ।

भैरव मुख्यतया कृष्णक देवता मानल गेने ई गामक ब्रह्मसङ्गे हिनक उपस्थिति देखएमे सेहो अवैछ । बहुते गाममे ब्रह्मपूजा आ भैरव पूजा सङ्गि कएल जाइछ । नगर डिहवार-बरहम गाम, डीहक रक्षक होइछ आ भिभियामे आसुरी शक्ति अर्थात् डाइन गुणक मार-सम्हारस’ रक्षाकलेल हिनकासबके जगाक’ अरोधल जाइछ । आम लोकके वैदिक पौराणिक देवतास’ बेसी जहिना घर’-गोंसाइ पूज्य होइछ तहिना प्रत्येक डीहके अपन डीहवार होइछ ।

तान्त्रिकमे भैरव-तन्त्र आ भैरवी-तन्त्र बहुत प्रचलित अछि । देवीक रौद्ररुपके भैरवी कहल जाइछ आ ई भैरवक स्त्री-शक्ति अछि । हिनक गणना दस महाविद्यामे कएल जाइछ । शाक्तसबमे भैरवीचक्र आ तान्त्रिकसबमे भैरवीतन्त्र बहुत महत्वक अछि । किछु महर्षिलोकनि तन्त्रशास्त्रक अन्तर्गते दस महाविद्याके तीन रुपमे व्यक्त कएने छथि आ सौभ्याग्र कोटिमे तारा आ त्रिपुर भैरवीक नाम वर्णित अछि ।



शत्रूक दलन कएनिहारि, त्रिजगतधारिणी ई भगवती माता महाकालीक स्वरुप अछि । बारहाही पुराणमे वर्णित अछि जे- ब्रह्मा, विष्णु आ शिवो हिनक साधना एवं आराधना कएने छथि, ताँ हिनक नाम त्रिपुरा पड़ल अछि । हिनक मूलमन्त्र अछि-

ॐ हस्त्री त्रिपुर भैरव्यै नमः ।  
भैरवी चक्र वास्तवमे

कालान्तरमे वाममार्गीसब अपना लेने अछि । ओकरे अन्तर्गत ओ अनेको पपप्रकारक नृत्य करैत अछि । हुनकालोर्कनिके मतेंमे एकर साधना कठिन अछिमुदा एहिस’ साधकके सिद्धि प्राप्त भ’ जाइछ, एहन विश्वास अछि ।

भिभियामे तान्त्रिक विधिस’ बनाएल गेल घैल उपर धधरा बडैत रहैत अछि । व्यापक तान्त्रिक परिभाषामे, चैतन्य

ज्योति-स्वरुप वा अग्नि-स्वरुप अछि । एकर प्रतिकात्मक उपयोग बहुते ठाम अनेको रुपमे भेल अछि । किन्तु सामान्यरुपमे संहारात्मक वा विनाशकारी प्रतीकक प्रदर्शन करवाक लेल कलामे अग्नि-ज्वाला विभिन्न रुपमे कएल जाइछ । उध्वमुखी ज्वालामे चेतना वा चित् शक्तिक उध्वमुखी विकासक प्रतीक प्रदर्शित करैछ ।

## वर्णमातृका आ बीजाक्षर



तान्त्रिक विद्यामे मंत्र-साधनाक महत्व निर्विवाद अछि । मुदा तान्त्रिक प्रतीकशास्त्रमे जाहि विशिष्ट मन्त्रक महत्व सर्वोपरि अछि ओ वर्णमात्रिका आ ओहिस’ बनल बीजमन्त्र अछि । तान्त्रिक परम्परामे बीजमन्त्र शाब्दिक वा ध्वनिपरक अभिव्यक्तिक मूल आधार अछि । विभिन्न प्रयोग आ उपयोगक अनुसार विभिन्न वर्णक समूह अथवा विनियोग बीजमन्त्रक निर्माण करैत अछि । ई तन्त्रशास्त्रक अपन निजी विशेषता अछि जे मन्त्र, जप, साधना आदिके द्वारा विभिन्न सिद्धि सभक प्राप्तिक माध्यम बनैत अछि ।

अ स’ ल’क’ ज्ञ धरिके अक्षरस’ निर्मित वर्णमालाक तान्त्रिक दृष्टिकोणस’ सर्वोच्च सत्ता वा शक्तिक नादमयी देह बनैत अछि । एकरा अक्षरमाला कहल गेल अछि आ सर्वदेवमयी, तत्काल सिद्धि दिअ’वाली शब्द-स्वरूपिणी बतालोल गेल अछि । पं.देवदत्त शास्त्रीक शब्दमे ...तन्त्रशास्त्रमे वर्णात्मक शरीर क वैज्ञानिक कल्पना कएल गेल अछि । वर्णात्मक शरीर सदा शिवक शब्दब्रह्म स्वरुप अछि । ताँ जीवके शिव कहल गेल अछि । पाशवद्ध भेलाक कारणे शिवमे जीवतत्त्व अछि । ओ जिवत्वके छोड़ि दए वा शिवत्वक स्मरण राखए, ताहिलेल ओकर अपन शब्द ब्रह्मस्वरुप शरीरके सदैव ध्यान करवाक चाही ।

पंचाशत वर्णमातृके ओकर शरीर अछि । जीवक, जीवत्वक सिद्धिक लेल वर्णमालाक जप कएनाइ आवश्यक अइ । सदाशिवक शब्दब्रह्म शरीर इएह वर्णमातृका अछि ।

- तन्त्र सिद्धान्त और साधना, डा. रविन्द्रनाथ मिश्र

## नेपालोके.....

जनसमर्थनके देखैत अपन सबटा अङ्गके कटनीतिकरुप द’क’ भूक’ पड़लै । शुरूमे सारकार, सत्ताक बलपर अन्नाके अनसनके बहुते तरहेँ दबैठि सकैत छलै, मुदा जनभावना भङ्क’के डरे, एहन कोनो काज नै कएलक जाहिस’ अन्नाक समर्थक विरोध आ विद्रोहमे उतरए । ध्यान देव’बला बात इहो छै जे भारत, महान लोकतान्त्रिक देश एहि दुआरे छै जे लोकतन्त्रप्रतिक निष्ठा आ प्रतिवद्धता तथा राष्ट्रियता प्रतिक समर्पण व एकर तागत आ पूजी अछि आ इएह एकर अवूर्व, अनमोल खम्हा अछि ।

नेपालक परिपेक्ष्यमे बात करी त’ देख’मे अवैछ जे वर्तमानमे संसारक सबस’ शक्तिशाली व्यवस्थापिका संसद- संविधानसभा अछि । नव नेपालक निर्माण आ संघीय संसंरचना विकासक जनआन्दोलनी म्याण्डेड एकरा विशिष्टरुपमे प्राप्त होइतो, एखन

राजनैतिक दलक सत्ता आ खुरसीक खेलमे भसियाक’, बौडरिया गेल अछि ततवे नइ, अराजकता, हिंसा-अपराध, भ्रष्टाचार आ दिशाहीनताक चलते राजनैतिक अवमूल्यन बड़भारी समस्या बनिक विकराल रुप ध’ लेने अछि । एहनमे एकरास’ पार पाब’के लेल सामाजिक-राजनीतिक विभिन्न मोर्चापर अन्ना हजारें सनके सन्त नेतासबहक अहिंसक आन्देलनक जरूरी अछि । रानीतिक दल आ राजनैतासबमेस’ बहुते अपन नीति-धर्म विसरि गेल होइतोमे अहिंसक आन्दोलनक दवावमे एकरा सबहक आँखिक अन्हरजाली हटतै की ? प्रतिक्षा अछि हमरोसबके नेपाली अन्ना सनके दस/एगारहट एहन जुभारु आन्दोलनीके जे देशक सब मोर्चापर जनसर्मथनक शक्तिपर राजनैतिक लड़ाइ, रचनात्मक रुपस’ लड़ए ।

## शुभकामना

सर्वस्वरुपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते !  
भवेभ्यस्त्राहि नो देखि दुर्गे देवि ! नमोस्तु ते ॥  
सर्वबाधा-प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरी !  
एवमेव त्वधा कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥

शुभ-विजयादशमी आ सुखरातिक

हार्दिक मंगलमय शुभकामना ।

## जीवनाथ चौधरी

## शुभकामना

शुभ-विजयादशमी आ सुखरातिक

हार्दिक मंगलमय शुभकामना ।

युनिभर्सल एकेडमी कलेज

जनकपुरधाम

फोन नं.: ०४१-५२४६७५

## शुभकामना

ॐ नमश्चण्डिकायै । श्री दुर्गा देव्यै नमः ।

सर्वमङ्गल-मङ्गल्यै शिवे स्वार्थसाधिके ।  
शरण्ये त्रयम्बके गौरि ! नारायणी ! नमोऽस्तुते ॥  
शरणागत- दीनार्त-परित्राण-परायणे !  
सर्वस्यर्ति हरे देवि ! नारायणी ! नमोऽस्तुते ॥

शुभ-विजयादशमी आ सुखरातिक

हार्दिक मंगलमय शुभकामना ।

जनकपुर नगरपालिका परिवार

जनकपुरधाम

## शुभकामना

शुभ-विजयादशमी आ सुखरातिक

हार्दिक मंगलमय शुभकामना ।

यातायात व्यवस्था कार्यालय

जनकपुरधाम, धनुषा

फोन नं.: ०४१-५२०२०९

## शुभकामना

ॐ नमश्चण्डिकायै । श्री दुर्गा देव्यै नमः ।

सर्वमङ्गल-मङ्गल्यै शिवे स्वार्थसाधिके ।  
शरण्ये त्रयम्बके गौरि ! नारायणी ! नमोऽस्तुते ॥  
शरणागत- दीनार्त-परित्राण-परायणे !  
सर्वस्यर्ति हरे देवि ! नारायणी ! नमोऽस्तुते ॥

शुभ-विजयादशमी आ सुखरातिक

हार्दिक मंगलमय शुभकामना ।

जिल्ला विकास समिति


धनुषा परिवार



विचार प्रवाह

धान कटू धनिया ... !

शक्तिस्वरूपा स्त्री



आयुर्वेद-शास्त्र आचार्य महर्षि आत्रेय अपन सोहितामे, शक्तिक स्वरूप सूत्ररूपस’ आ संक्षेपमे एहि तरहे वर्णन कएने छथि

स्त्रीषु प्रीतिर्विशेषेम स्त्रीष्वपत्यं प्रतिष्ठतम् ।

धर्मार्थौ स्त्रीषु लक्ष्मीश्च स्त्रीषु लोकाः प्रतिष्ठिताः ॥

— ( चरकसंहिता - चिकित्सास्थान, अ. २ )

प्रीतिक निवास अधिकार स्त्रिएमे रहैत अछि । सन्तानक जननी स्त्रीए अछि । धर्म स्त्रीएमे रहैत अछि । तएँ ओ धर्मपत्नी कहबैछ । अर्थ स्त्रिएमे रहैछ । स्त्रिएतामे लक्ष्मीक वास रहैत अछि । स्त्रिए शक्तिस्करूपा छथि ।

माता, स्त्री, भगिनी, पुत्री, पुतौह तथा अओरो अनेको अनन्तरूपके धारण कए शक्ति संसारक संचालन कए रहल छथि । संसार स्त्रिएमे स्थित अछि, तएँ स्त्री लोकनि संसारक माता छथि माया, प्रकृति आ शक्ति - तीनू एके होइतहुँ अनेक छथि ।

प्रस्तुती - जीवनाथ चौधरी

शक्तिक स्वरूप

—पं. मायाधरजी तर्क पञ्चानन, कल्याण

शक्तिए सम्पूर्ण जगतक सृष्टि, स्थिति आ प्रलय कर एवाली छथि । ब्रह्मा जे सृष्टिकरैत छथि, विष्णु जे रक्षा करैत छथि आ रुद्र जे संहार करैत छथि, ई सब शक्तिएक स्फुरण अछि, -

नूनं सर्वेषु देवेषु नाना नामधरा ह्यहम् ।

भवानि शक्ति रूपेण कोमि च पारक्रमेम ॥

गौरी ब्राह्मी तथा रौद्री वाराही वैष्णवी शिवा ।

वरुपी चाथ कौवेरी नारसिंही चं वैष्णवी ॥

समस्त देवतो शक्तिएक प्रेरणस’ सुख-दुखक अनुभव कएल करैत अछि, मनुष्य तथा अन्य जीव सबके त’ बाते की अछि ?

जहिना चेतन पदार्थमे शक्तिक विलास प्रत्यक्ष देखाइ दैत अछि, ओहिना जड़ पदार्थसेहो हुनके प्रभाव प्रत्यक्ष देखाइ दैछ ।

ईश्वरमे समस्त कार्य करबाक जे सामर्थ्य अछि, ओएह शीक्त छथि । परब्रह्म परमात्मा शक्ति विशिष्ट भइएक’ जगत्क रक्षण, नियमादि सब कार्य कएमे समर्थ होइत अछि । शक्तिस’ रहित भ’क’ ओहो किछे नइ क’ सकैछ । इएह बात देवी भागवतक एहि श्लोकमे कहल गेल अछि—

तच्छक्तिभूतः सर्वेषु मित्रो ब्रह्मादिमूर्तिभिः ।

कर्त्ता भोक्ता च संहर्त्ता सकलः स जगन्मयः ॥

प्रस्तुती— जयचन्द्र मिश्र

टिटकारी पुक्की !



❧ हम चाँढ़ साँढ़ ! अपन हम अरुआठल-अलसाएल,भ्रूपलएवे करब, तैस’ लोके की ?!


❧ हे, सून’ हो लोक ! हम अनेर जे अरु खढ़ खाइछी, निफिकिर मनमस्त रहैछी, तैमे अहाँके की जाइए ! घर हमरे नै, बाल-बच्चाके जिम्मेबारी । हमरे नै आगू नाथ नै, पाछू पगहा । हमरा समाजमे नै कोनो नियम-कानूनक, डर-भय छै । तैं अरुआठल अलसायल भ्रूपलाइछी । ...चुनाव जीतक’ नै, संढ़दग्गी कराक’ आएल छी ! तैं अनेर खढ़,मुड़ी-खाँढ़ चड़ैछी । अहाँके नेता, मन्त्री जकाँ नै छी जे चुनाव जीतक’ ऐवते, नेत-घटू वेठुआ बनिक’, भ्रष्टाचारी क’क’, अधरम बैक बैलेस बढ़ब’ लगली !

...यौ कहली त’, महान मनुखस’ हम जानवर लाख गुणा नीक, आ हजार गुणा ऊपर ! कमस’ कम हमरासबमे, अपनेके विरुद्धमे, अपने समाज, बारहटा ऐव, मुढ़ा लगाक’ बन्द-विरोध, आन्दोलन-हड़ताल त’ नै ने करैए ! हम जानवर छी ! नाइट-उधार छी, त’ छी । महज छिनरपन नै करैछी । देह धरम हमरोसबके छै, महज बान्हल आरिके, प्रकृतिक नियमके, छिनरपन नामे तोड़िक’, अहाँसुन जकाँ अधर म पाप त’ नइ ने करै छी !

कैलास दास

दशहराक उपासना

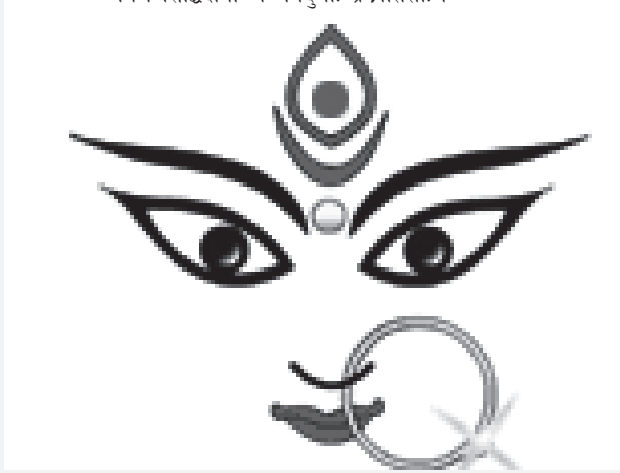
ओना त’ दशहरा चारिटा कहल गेल अछि, अषाढ़ मासक दशहरा, आसिन मासक दशहरा, माघ मासक दशहरा आ चैत मासक दशहरा ! चारु दशहरामे प्रधानता अछि-आसीन दशहरा के । आसीन दशहराके विजया-दशमी सेहो कहल गेल अछि । इएह दशहरामे महिषासुरक वध भेल छल । जँ एहि दशहराक संग भवराज्ञी दुर्गाक प्रत्यक्ष सम्बन्ध अछि ।



कृष्ण शंकर मिश्र

सर्व विदित अछि जे दुर्गाजी त्रि-देवांशस’ प्रकट भेल छथि आ हुनक नौटा रूप विख्यात अछि, तैं हुनका ‘नव-दुर्गा प्रकृतिता ” कहल गेल अछि -

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।  
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥  
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।  
सप्तमं कालरात्री च महागौरीति चाऽष्टमम् ॥  
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।



दशहरामे नौ दिनक पूजनमे दुगा जीक नवो रूपके पूजन करबाक विधान अछि । प्रथम दिन भगवती दुर्गाक पहिल स्वरूप, शैलपुत्रीके पूजन होइत अछि । शैलपुत्रीक ध्यान “वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम् वृषरुद्धा शुलधरां शैलपुत्री यशास्विनोम् ” मंत्रसँ कएल जाइत अछि ।

दोसर दिन, भगवती दुर्गाक दोसर स्वरूप “ब्रह्मचारिणि” के पूजन करबाक विधान अछि । ब्रह्मचारिणी देवीक स्वरूप पूर्ण ज्योतिर्मय आ भव्य छैन्ह । ओ तपस्विनी छथि । हुनका दहिना हाथमे जप-माला आ वामा हाथमे कमलक फूल छैन्ह । देवी ब्रह्मचारिणीक ध्यान मंत्र एहि प्रकारें अछि –

“दधाना करपद्माभ्याम मक्षमाला कमण्डलू ।  
देवी प्रसीदतु मसि ब्रह्मचारिण्य नुत्तमा ॥

तेसर दिनक उपास्य देवी छथि “चन्द्रघण्टा” । ई भगवती दुर्गाक तेसर स्वरूप छथि । एहि स्वरूपके परम-शान्तिदायक आ कल्याणकारी कहल गेल अछि । चन्द्रघण्टा देवी स्वर्ण कान्ति छथि । दशटा भुजा छैन्ह । दशो भुजामे अस्त्र-शस्त्र धारण कएने छथि । सिंहवाहिनी छथि आ युद्ध हेतु उद्यत रहैत अछि –

“पिण्डज प्रवरारुद्धा चण्डकोपास्त्रकैर्युता ॥  
प्रसादं तनुते महयं चन्द्रघण्टेति विश्रुता ॥

ई मंत्र चन्द्रघण्टा देवीक ध्यान मंत्र अछि ।

चारिम दिनमे भगवती दुर्गाक चारिम स्वरूप कूष्माण्डाक पूजन करबाक विधान अछि । अपन मधुर मुश्रीद्वारा ब्रह्माण्डके उत्पन्न कएने छथि- देवी कूष्माण्डा ! जखन श्रृष्टिके अस्तित्वो नहि छल । चारु दिश मात्र अन्हार-कुप छल । इएह देवी अपन “इषडा” हास्यसँ ब्रह्माण्डक रचना कएने छलीह । तैं कूष्माण्डा देवी श्रृष्टिके आदि-स्वरूपा, आदि शक्ति छथि । देवी के ध्यान मंत्र अछि –

“सुरा सम्पूर्ण कलशं रुधिराप्लुतमेव च ।  
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तुमे । ”

पाँचम दिन भगवती दुर्गाक स्कन्दमाता स्वरूपक पूजन करबाक चाही । स्कन्दमाताके चारिटा भुजा छन्हि । ओ अपन कोरमे भगवान स्कन्दक बाल रूपके बैसौने छथि । ई देवी सिंह वाहिनी छथि । हिनक ध्यान मन्त्र एहि प्रकारें अछि –

सिंहासना गता नित्यंपदमाश्रित कर द्वया ।  
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी ॥

नवरात्राक छठम् दिन दुर्गाजीक कात्यायनी स्वरूपक पूजन कएल जाइत अछि । सर्व प्रथम ऋषि कात्यायनद्वारा पूजित भेलाक कारणें ई देवी कात्यायनी नामसँ अभिहित भेल छथि । ई देवी चारिएटा भुजा धारण कएने छथि । ईहो सिंह वाहिनी छथि माता कात्यायनीक ध्यान मन्त्र एहि प्रकारें अछि—

चन्द्रहासोज्ज्वल करा शार्दूल वर वाहना ।  
कत्यायनी शुभं यथादेवी दानवघातिनी ॥

सातम दिनक भगवती दुर्गाक कालरात्री स्वरूपक पूजन करबाक चाही । कालरात्रीक रंग कारी खट-खट छन्हि ।हुनक केश छिड़िआएल छन्हि । ओ विजली जकाँ चमकैत माला धारण कएने छथि । तीनटा आंखि छन्हि । ओ गदहापर सवार छथि । चारिटा हाथ धारण कएने छथि । हिनक स्वाँस-प्रस्वाँससँ आगिक धधरा निकलैत अछि । हिनक ध्यान मन्त्र अछि—

एक वेणी जयाकर्णपूरा नग्नखरास्थिता ।  
लम्बोवठी कर्णिकाकणी तैलाभ्यभुजा शरीरीणि ॥  
वामपादोल्लसलोहंलता कण्टक भूषणा ।  
वर्धनमूर्धध्वजा कृवणा कालरात्री भयंकरी ॥

आठम दिनक महागौरी स्वरूपक पूजा करबाक विधान अछि – नवरात्रामे । ई देवी चारिटा भुजा धारण कएने छथि । हिनक वाहन वृषभ अछि । अत्यन्त गौरवर्णक छथि । शक्ति अमोघ आ सधः फलदायी अछि । हिनक ध्यान मन्त्र अछि –

स्वेते वृषे समारुढा स्वेताम्बरधरा शुचिः ।  
महागौरी शुभं दधान्महादेव प्रमोददा ॥

माता दुर्गाक नवम् स्वरूप सिद्धिदात्री अछि । सिद्धिदात्रीक पूजन नवम दिन कएल जाइत अछि । ई देवी सब प्रकारें सिद्धिप्रदान करैत छथि । मारकण्डेय पुराण अनुसार आठटा सिद्धि अछि – अणिमा, महिमा, गरिमा, लहिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व आ वशित्व । देवी पुराणक अनुसार भगवान शिव हिनके कृपासँ सब तरहक सिद्धि प्राप्त कएने छथि । हिनक ध्यान मन्त्र अछि –

सिद्धिगन्धर्वयक्षधैर सुरैरमैररपि ।  
सेव्यमाता सदाभूमात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी ।  
भगवतीक बहुतो स्वरूप हमरासबहक सोझा अछि आ बड़-बड़ पूजा-विधान सब शास्त्रमे विहित अछि । विधि-विधानस’ भगवती नवरात्राक पूजा जँ कएल जाय त’ मनुष्यक जीवन सब तरहें सार्थक भ’ सकैत अछि ।